आदिवासी महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के विश्लेषण का अध्ययन

Nitesh Kumar Suman[1]*, Dr. Aditya Prakash[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University.

[2] Professor, Education Department, Kalinga University.

सार - आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण किया है। आदिवासी समुदायों के सदस्यों को शिक्षित बनाने और उन्हें समाज में सम्मानित नागरिक के रूप में स्थान देने के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हमने विभिन्न आदिवासी समुदायों की महिलाओं के शिक्षा स्तर, शैक्षिक सुविधाओं के उपलब्धता, शिक्षा के प्रति रुझानों, शिक्षा के लाभों और समस्याओं के समीक्षा की है। इस अध्ययन के परिणाम आदिवासी महिलाओं के शिक्षित होने के लाभों को प्रमाणित करेंगे और उन्हें समृद्धि और सामाजिक समानता तक पहुंचाने के लिए नीतियों का सुझाव देने में मदद करेंगे।जनसंख्या की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए, उनकी भौगोलिक स्थिति, आकार और संसाधनों की कमी के संदर्भ में यह अध्ययन करने का निर्णय लिया गया कि सभी प्रखंडों के गांवों से लगभग 500 यादृच्छिक रूप से चयनित आदिवासी विवाहित महिलाओं को मल्टीफ़ेज़ रैंडम सैंपलिंग विधि द्वारा चुना गया है। बेहतर और वास्तविक प्रतिक्रिया पाने के लिए विषय केवल विवाहित महिलाओं तक ही सीमित थे। सामाजिक-आर्थिक डेटा में महिलाओं का व्यक्तिगत डेटा शामिल था। शिक्षा और जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता के आंकड़े बहु प्रतिक्रिया प्रकार के थे जिन्हें कोड संख्या के साथ दर्ज किया गया था।

खोजशब्द - आदिवासी, शैक्षिक, महिलाओं

---------------------------------x---------------------------------

परिचय

दुनिया के परिदृश्य का हर घटक, जीवित और निर्जीव दोनों, समय के साथ तेजी से बदल रहा है। निर्जीव परिवर्तनों के उदाहरणों में ध्रुवीय बर्फ का पिघलना शामिल है, जिसके कारण महासागरों में वृद्धि होती है, सुनामी, भूकंप और अप्रत्याशित स्थानों में प्रजातियों का विलुप्त होना। दुनिया भर में जीवित प्रजातियों के अस्तित्व के लिए प्राकृतिक लड़ाई भी कई अकल्पनीय परिवर्तनों का कारण बनती है, जैसा कि बाहरी हस्तक्षेप है। छोटे देशों को स्थिर करने के लिए, सुधारात्मक उपाय सटीक रूप से किए जाते हैं। ऊपर वर्णित परिवर्तनों की तरह परिवर्तन होते हैं, लेकिन भारत जैसे देश में उन पर किसी का ध्यान नहीं जाता है, जहां कई अलगअलग भौगोलिक-, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र हैं। ये बदलाव एक प्रमुख राष्ट्रीय मुद्दे में परिणत होते हैं। जब तक यह लाइलाज बीमारी के बिंदु तक नहीं पहुंच जाता, तब तक रोग के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते हैं। बढ़ती आबादी इन्हीं मुद्दों में से एक है।

झारखण्ड यानी झार या झाड़ जो स्थानीय रूप में वन का पर्याय है और खण्ड यानी टुकड़े से मिलकर बना है। अपने नाम के अनुरुप यह मूलतः एक वन प्रदेश है जो झारखंड आंदोलन के फलस्वरूप) जिसे बाद में कुछ लोगों द्वारा वनांचल आंदोलन के नाम से जाना जाता है सृजित (हुआ। झारखण्ड एक जनजातीय राज्य है। 15 नवम्बर 2000 को यह प्रदेश भारतवर्ष का 28 वां राज्य बना। बिहार के दक्षिणी हिस्से को विभाजित कर झारखंड प्रदेश का सृजन किया गया था। झारखण्ड का सामान्य अर्थ है झाड़ों का प्रदेश। बुकानन के अनुसार काशी से लेकर बीरभूम तक समस्त पठारी क्षेत्र झारखण्ड कहलाता था। ऐतरेय ब्राहमण में यह ‘ ठपुण्ड ’ नाम से वर्णित है। जनजातीय क्षेत्रों के लिये झारखण्ड शब्द का प्रयोग पहली बार 13 वीं शताब्दी के एक तामपत्र में हुआ है। माहभारत काल में इस क्षेत्र का वर्णन ‘ ठपुण्डरिक देश ’ के नाम से हुआ है जबकि मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारों ने इस क्षेत्र का उल्लेख झारखण्ड नाम से किया है। मल्लिक

www.ignited.in

मुहम्मद जायसी ने अपनी शास्वत रचना पद्मावत में झारखण्ड नाम की चर्चा की है। सम्भवतः जंगल - झाड़ की अधिकता ने ही झारखण्ड नाम को जन्म दिया ऐसा प्रतीत होता है। झारखण्ड भारत का एक राज्य है। राँची इसकी राजधानी है। झारखंड की सीमाएँ उत्तर में बिहार, पश्चिम में उत्तरप्रदेश एवं छत्तीसगढ़, दक्षिण में ओड़िशा और पूर्व में पश्चिम बंगाल को छूती हैं। लगभग संपूर्ण प्रदेश छोटानागपुर के पठार पर अवस्थित है। संपूर्ण भारत में वनों के अनुपात में प्रदेश एक अग्रणी राज्य माना जाता है। बिहार के दक्षिणी हिस्से को विभाजित कर झारखंड प्रदेश का सृजन किया गया था। इस प्रदेश के अन्य बड़े शहरों में धनबाद, बोकारो एवं जमशेदपुर शामिल हैं। झारखंड राज्य मे जनजातियां 32 रहती हैं, इनमें से संथाल सबसे बड़ा समूह है। पूरी आदिवासी आबादी का यह करीब एक तिहाई है। उरांव)19.6(प्रतिशत 6, मुंडा)14.86 प्रतिशत) और हो (10.63 प्रतिशत26 है। झारखंड की जनसंख्या में (.प्रतिशत 2 अनुसूचित जनजाति, 12. प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं 1 61.प्रतिशत अन्य का है। गंभीर प्रतिद्वंद्विता के कारण 7 देश के दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों को लेकर राज्य, कस्बे और यहां तक कि परिवार भी असमंजस में हैं। खनिज संसाधनों के निष्कर्षण से वन, प्राकृतिक संरक्षण और पर्यावरण खतरे में हैं। संसाधनों के अति प्रयोग के कारण प्राकृतिक आपदाएं अधिक बार और अधिक विनाश के साथ हो रही हैं। ऐसे कई भारतीय हैं जो केवल मेज पर खाना रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यद्यपि मृत्यु दर में पूरे वर्षों में कमी आई है, महामारी और घातक बीमारियां जीवन का दावा करना जारी रखती हैं जिन्हें रोका जा सकता है यदि अधिक लोगों को अच्छी जीवन शैली के बारे में शिक्षित किया जाता है। पूरे भारत में, शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु अभी भी चिंताजनक रूप से प्रचलित हैं। महिलाओं का एक बड़ा प्रतिशत और पुरुषों का एक छोटा प्रतिशत पढ़ने और लिखने के लिए अपना पहला परिचय प्राप्त करेगा। भारत की जनसंख्या अब संसाधन नहीं बल्कि समुदाय पर बोझ है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि में योगदान देने वाले कई चर हैं। आज एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में जनसंख्या स्थिरीकरण की स्वीकृति के लिए एक इष्टतम वातावरण बनाएं। इस समस्या का उत्तर ज्ञान के प्रसार और लड़कियों और महिलाओं के सशक्तिकरण में है।सबसे बड़े समूह राज्य मे 32 जाति समूह, जनसंख्या का एक तिहाई है। उरंव)19.66 फीसदी(, मुंडा)14.86 फीसदी) और हो (10.63 फीसदीहै। (निवास की निवास में26.2 संरचना का निर्माण, 12.1 प्रतिशत संरचना और 61.7 प्रतिशत अन्य का। हालाँकि, जनसंख्या नीति रखने वाला भारत दुनिया का पहला देश होने के बावजूद, बहुत कम प्रगति हुई है। गंभीर प्रतिद्वंद्विता के कारण देश के दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों को लेकर राज्य, कस्बे और यहां तक कि परिवार भी असमंजस में हैं।

पूरे भारत में, शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु अभी भी चिंताजनक रूप से प्रचलित हैं। महिलाओं का एक बड़ा प्रतिशत और पुरुषों का एक छोटा प्रतिशत पढ़ने और लिखने के लिए अपना पहला परिचय प्राप्त करेगा। भारत की जनसंख्या अब संसाधन नहीं बल्कि समुदाय पर बोझ है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि में योगदान देने वाले कई चर हैं। आज एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में जनसंख्या स्थिरीकरण की स्वीकृति के लिए एक इष्टतम वातावरण बनाएं। इस समस्या का उत्तर ज्ञान के प्रसार और लड़कियों और महिलाओं के सशक्तिकरण में है।.

आदिवासी महिलाओं की शैक्षिक स्थिति

अनुसूचित जनजातियों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति के उन्नयन के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा न केवल आर्थिक विकास के लिए बल्कि आदिवासी समुदायों की आंतरिक शक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है जो उन्हें जीवन की नई चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है। भारत में पिछड़े समूहों के बीच साक्षरता और शिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास के शक्तिशाली साधन हैं। जनजातीय न केवल सामान्य आबादी और साक्षरता और शिक्षा में अनुसूचित जाति की आबादी के बीच पिछड़ा हुआ है। यह असमानता अनुसूचित जनजाति की महिलाओं में और भी अधिक उल्लेखनीय है, जिनकी साक्षरता दर देश में सबसे कम है। शिक्षा एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति और समाज व्यक्तिगत दान में सुधार कर सकते हैं, क्षमता के स्तर का निर्माण कर सकते हैं, बाधाओं को दूर कर सकते हैं और अपनी भलाई में निरंतर सुधार के अवसरों का विस्तार कर सकते हैं। यह पुरुषों के लिए नहीं बल्कि आदिवासी महिलाओं के लिए भी लागू है। जनजातीय महिलाओं में साक्षरता दर और शिक्षा का परिदृश्य तुलनात्मक रूप से कम है, विकास के लिए अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

साहित्य की समीक्षा

डॉ रूप कमल कौर)2020) यह लेख आदिवासी महिलाओं में शिक्षा की भूमिका पर चर्चा करता है जो विकास के विभिन्न स्तरों पर है। पहले सरकार के पास उनकी शिक्षा के लिए कोई सीधा कार्यक्रम नहीं था, लेकिन बाद के वर्षों में आरक्षण नीति में कुछ बदलाव किए गए हैं। आदिवासी

www.ignited.in

महिलाओं में शिक्षा के निम्न स्तर के कई कारण हैं। औपचारिक शिक्षा को उनके सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के लिए आवश्यक नहीं माना जाता है। अंधविश्वास और मिथक शिक्षा को नकारने में अहम भूमिका निभाते हैं। अधिकांश जनजातियाँ घोर गरीबी में जीवन यापन करती हैं। लड़कियों के लिए स्कूल जाना आसान नहीं होता है। जैसा कि उन्हें अतिरिक्त मददगार माना जाता है। औपचारिक स्कूल बच्चों के लिए कोई विशेष रुचि नहीं रखते हैं। अधिकांश जनजातियाँ आंतरिक और दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित हैं जहाँ शिक्षक बाहर से नहीं जाना चाहेंगे।

मुकेश कुमार(2018) शिक्षा मानव की एक ऐसी मूलभूत आवश्यकता हैं जो उसके बौद्धिक विकास , समाज के , गाँव के , जिले के , प्रदेश के और देश के आर्थिक , राजनैतिक , सामाजिक एवं औद्योगिक विकास में सहायक होती है शायद इसलिए यह कहा जाता हैं कि शिक्षावर्तमान और भविष्य के लिए अद्भुत निवेश के लॉक का मत हैं - ' पौधों का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है " बालक जन्म के समय असहाय एवं अबोध होता है। अरस्तु के अनुसार - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं , शिक्षा के आभाव में मानव जीवन की कल्पना करना असम्भव है।

मित्रा)2007) ने सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भ में, मुख्य धारा के हिंदुओं की तुलना में भारत में अनुसूचित जनजातियों के बीच महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण किया है। अध्ययन से पता चलता है कि उनके समुदाय में आदिवासी महिलाओं की उच्च स्थिति है और जनजातीय समुदायों में बिल्कुल भी लैंगिक भेदभाव नहीं है।

भसीन)2007) ने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों यानी लद्दाख, उत्तर पूर्वी क्षेत्र, राजस्थान में आदिवासी महिलाओं के बारे में अपना अध्ययन किया है और उन्होंने पाया कि आदिवासी समुदायों में आदिवासी महिलाओं का बहुत महत्व है। आदिवासी समुदाय बेटी के जन्म को अभिशाप नहीं मानते। दहेज प्रथा नहीं है और लड़की को अपना पति चुनने का अधिकार है, तलाक आसान और सुरक्षित है। आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की अहम भूमिका होती है। वे पुरुष समकक्षों के साथ संयुक्त निर्णय लेते हैं। नारी शक्ति का विस्तार सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र तक नहीं है। उनकी आर्थिक शक्ति का अनुवाद संबंधित सामुदायिक प्राधिकरण में नहीं किया जाता है। महिला वर्चस्व घरेलू डोमेन के साथ प्रतिबंधित है और आधिकारिक स्तर पर उचित श्रेय और महत्व नहीं दिया जाता है। सार्वजनिक मामलों और सामुदायिक निर्णय लेने में महिलाओं का द्वितीयक महत्व है।

सरिता आर्य (2012) भारत में महिलाएं, जो प्राचीन भारत में पूजनीय थीं, लेकिन दशकों पहले सबसे अधिक उपेक्षित थीं, अब अधिक ध्यान आकर्षित कर रही हैं। भारत में इस दिशा में काफी प्रगति हुई है- अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। आदिवासी समाज शिक्षा में और अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने और इस प्रकार आज के तथाकथित पुरुष प्रधान दुनिया में उन्हें एकीकृत करने में बहुत पीछे है। जनजातीय क्षेत्रों में आबादी का बड़ा हिस्सा सह-संबंध और शैक्षिक प्रौद्योगिकी को कम से कम अपनाने के कारण पिछड़ा हुआ है। आदिवासी समाज बंद और अलग-थलग पड़े समाज हैं जो सघन समूहों में रहते हैं। जब इस आदिवासी समूहों को शैक्षिक क्षेत्र के मामले में माना जाता है, तो जनजातियों के बीच शैक्षिक विकास में राष्ट्रीय औसत साक्षरता दर 29% है, जिनमें से, जनजातियों की उच्चतम साक्षरता दर गुजरात में 36% (48% पुरुष और 24% महिला) है और राजस्थान में साक्षरता दर सिर्फ 19.44% है (महिला दर 4.22% और पुरुष दर 33.29%)। कुछ हद तक, इस प्रकृति की शिक्षा और ग्रामीण विकास से संबंधित प्रयास स्वतंत्रता से पहले और सामुदायिक विकास ब्लॉक कार्यक्रम के हिस्से के रूप में किए गए हैं। यहाँ, हालाँकि शिक्षा कुछ क्षेत्रों और योजनाओं तक सीमित रही है, जहाँ मुख्य रूप से राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर तैयार की गई योजनाओं के निष्पादन के लिए विस्तार सेवाएँ बनाई गई हैं।

आजाद अहमद अंद्राबी, (2014) शिक्षा विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में उद्यम करने के लिए पर्याप्त दक्षता प्रदान करती है। भारत एक बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय देश है जिसकी जनजातीय आबादी 104.8 मिलियन है, जो देश की कुल आबादी का 8.6 प्रतिशत है। बड़ी संख्या में आदिवासी महिलाएं विभिन्न चरणों में शिक्षा से चूक गई हैं और उन्हें सशक्त बनाने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने की बहुत आवश्यकता है ताकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। 2011 की जनगणना के अनुसार जम्मू और कश्मीर की कुल जनसंख्या 12,54,1302 है, जिसमें अनुसूचित जनजाति राज्य की कुल जनसंख्या का 11.9% है। 2001 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल जनसंख्या के लिए साक्षरता दर 55.5% (पुरुष 67% और महिला 43%) थी और 2011 की जनगणना में ये आंकड़े बढ़कर 68.7% (पुरुष 78.2% और महिला

58.0%) हो गए हैं। राज्य सरकार द्वारा की गई गंभीर शैक्षिक पहलों के लिए। 2001 की जनगणना के अनुसार जनजातीय आबादी के बीच साक्षरता दर 37.5% (पुरुष 48.2% और महिला 25.5%) थी और 2011 की जनगणना में 50.6% (पुरुष 60.5% और 39.7%) थी। यह राज्य की सामान्य आबादी और जनजातीय समुदायों के बीच साक्षरता अंतर को प्रदर्शित करता है। राज्य की अधिकांश आदिवासी महिलाएं निरक्षर हैं, नामांकन कम है और स्कूल छोड़ने की दर अधिक है। आदिवासी महिलाओं के लिए प्रासंगिक पाठ्यक्रम, अधिक आदिवासी शिक्षकों, महिलाओं के लिए अलग शौचालय, बेहतर शिक्षण विधियों, स्कूल से दूरी कम करने और लड़कियों की शिक्षा की लागत को कम करने के माध्यम से शिक्षा प्रणाली के विस्तार और सुधार की तत्काल आवश्यकता है। आदिवासी महिलाओं के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने में गैर सरकारी संगठन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जम्मूकश्मीर में आदिव-ासी महिलाओं को शिक्षा देना अभी भी चिंता का विषय है।

डॉ) नीरजा .पी.2011) शिक्षा प्रणाली को एक व्यक्ति को हमेशा बदलती गतिशील दुनिया की जरूरतों के अनुकूल बनाना चाहिए। शैक्षिक प्रणाली में बदलाव से सामाजिक अंतराल को भी कम किया जाना चाहिए ताकि किसी भी कौशल को हासिल करने या हासिल करने में किसी भी हद तक उचित मान्यता को सक्षम किया जा सके। पूरे भारत में आदिवासी समुदाय को विभिन्न प्रकार के अभावों का शिकार होना पड़ा है जैसे भूमि और अन्य संसाधनों से अलगाव। विशेष रूप से आदिवासी महिलाएं राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा से भले ही दूर हैं, लेकिन उन्हें सामान्य रूप से समाज को प्रभावित करने वाले सामाजिकआर्थिक परिवर्तनों के - प्रभाव से दूर नहीं रखा जाता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में, आदिवासी महिला को कुछ मानदंडों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है जो उसकी स्वतंत्रता, पारंपरिक उत्पादक प्रणाली, उसके घर, परिवार और बच्चों और यहां तक कि उसके अपने जीवन पर उसका नियंत्रण भी छीन सकता है। तथ्य यह है कि बड़ी संख्या में आदिवासी महिलाएं विभिन्न चरणों में शिक्षा से चूक गई हैं और उन्हें सशक्त बनाने के लिए अवसर प्रदान करने की बहुत आवश्यकता है ताकि वे आर्थिक आत्मनिर्भरता और यहां तक कि सामाजिक परिवर्तन के लिए नेतृत्व के गुणों को ग्रहण कर सकें।

पद्धति

वर्तमान विषय का उद्देश्य जनजातीय महिलाओं के बीच शिक्षा और जनसंख्या जागरूकता का अध्ययन करना है झारखण्ड यानी झार या झाड़ जो स्थानीय रूप में वन का पर्याय है और खण्ड यानी टुकड़े से मिलकर बना है। अपने नाम के अनुरुप यह मूलतः एक वन प्रदेश है जो झारखंड आंदोलन के फलस्वरूप सृजित हुआ। झारखण्ड एक जनजातीय राज्य है। 15 नवम्बर 2000 को यह प्रदेश भारतवर्ष का 28 वां राज्य बना। बिहार के दक्षिणी हिस्से को विभाजित कर झारखंड प्रदेश का सृजन किया गया था। झारखण्ड का सामान्य अर्थ है झाड़ों का प्रदेश। बुकानन के अनुसार काशी से लेकर बीरभूम तक समस्त पठारी क्षेत्र झारखण्ड कहलाता था। ऐतरेय ब्राहमण में यह ‘ ठपुण्ड ’ नाम से वर्णित है। झारखण्ड भारत का एक राज्य है। राँची इसकी राजधानी है। झारखंड की सीमाएँ उत्तर में बिहार, पश्चिम में उत्तरप्रदेश एवं छत्तीसगढ़, दक्षिण में ओड़िशा और पूर्व में पश्चिम बंगाल को छूती हैं। लगभग संपूर्ण प्रदेश दक्षिणी छोटानागपुर के पठार पर अवस्थित है। संपूर्ण भारत में वनों के अनुपात में प्रदेश एक अग्रणी राज्य माना जाता है। बिहार के दक्षिणी हिस्से को विभाजित कर झारखंड प्रदेश का सृजन किया गया था। इस प्रदेश के अन्य बड़े शहरों में धनबाद, बोकारो एवं जमशेदपुर शामिल हैं। झारखंड राज्य मे 32 जनजातियां रहती हैं, इनमें से संथाल सबसे बड़ा समूह है। पूरी आदिवासी आबादी का यह करीब एक तिहाई है। उरांव)19.66 प्रतिशत(, मुंडा)14.86 प्रतिशत) और हो (10.63 प्रतिशतहै। झारखंड (की जनसंख्या में26.2 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति, 12.1 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं 61.7 प्रतिशत अन्य का है।

जनसंख्या की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए, उनकी भौगोलिक स्थिति, आकार और संसाधनों की कमी के संदर्भ में यह अध्ययन करने का निर्णय लिया गया कि सभी प्रखंडों के गांवों से लगभग 500 यादृच्छिक रूप से चयनित आदिवासी विवाहित महिलाओं को मल्टीफ़ेज़ रैंडम सैंपलिंग विधि द्वारा चुना गया है। बेहतर और वास्तविक प्रतिक्रिया पाने के लिए विषय केवल विवाहित महिलाओं तक ही सीमित थे।

डेटा विश्लेषण

उत्तरदाताओं से एकत्र किए गए डेटा प्रकृति में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों थे। जागरूकता डेटा प्रकृति में गुणात्मक थे। सामाजिक-आर्थिक डेटा में महिलाओं का व्यक्तिगत डेटा शामिल था। शिक्षा और जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता के आंकड़े बहु प्रतिक्रिया

www.ignited.in

प्रकार के थे जिन्हें कोड संख्या के साथ दर्ज किया गया था।

और विश्लेषण किया गया था ।

तालिका.1: आदिवासी महिलाओं का परिवार

N = 500, (सभी विषयों का अध्ययन किया गया)

क्रमांक	विशेषता	विनिर्देश	संख्या	%
1	परिवार का प्रकार	नाभिकीय	201	40.2
		संयुक्त	299	59.8
2	परिवार के कुल सदस्य	03. के भीतर	082	16.4
		4 से 6	135	27.0
		7 से 10	241	48.2
		10 से अधिक	042	08.4

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 59.8 प्रतिशत आदिवासी परिवार संयुक्त परिवार प्रकार के थे और शेष एकल परिवार के थे या जिनके बच्चे नहीं थे। परिवार के सदस्यों की कुल संख्या 7 से 48.2 प्रतिशत अध्ययन विषयों के भीतर थी और 16.4 प्रतिशत छोटे परिवार थे।

शैक्षिक स्थिति के आंकड़ों का विश्लेषण

अध्ययन के विषयों के साथ वास्तविक साक्षात्कार द्वारा प्रासंगिक जानकारी एकत्र की गई थी। उन्हें सारणीबद्ध किया गया और उनका विश्लेषण किया गया।

तालिका 2: अध्ययन किए गए विषयों का शैक्षिक स्तर

N = 500, (सभी विषयों का अध्ययन)

क्रमांक	विशिष्टता	संख्या	%
1	कोई पढाई नही	068	13.6
2	लोअर प्राइमरी (कक्षा III तक)	032	06.4
3	उच्च प्राथमिक (कक्षा IV और कक्षा V)	051	10.2
4	मध्य अंग्रेजी (कक्षा VI और कक्षा VII)	216	43.2
5	हाई स्कूल (कक्षा आठवीं से दसवीं कक्षा तक)	060	12.0
6	प्लस -2 (कक्षा XI और कक्षा XII)	056	11.2
7	प्लस -3 (स्नातक तक 3 वर्ष)	011	02.2
8"	व्यावसायिक 0	006"	01.2

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि अध्ययन के 13.6 प्रतिशत विषय पूरी तरह से अशिक्षित थे। 16.6 प्रतिशत ने प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की है। अधिकांश विषय जो कि 43.2 प्रतिशत विषय हैं, मध्य अंग्रेजी कक्षाओं (कक्षा VI और VII) तक शिक्षित थे। हाई स्कूल से लेकर स्नातक स्तर तक की हिस्सेदारी केवल 25.4 प्रतिशत थी। व्यावसायिक समूह 1.2 प्रतिशत का गठन किया।

तालिका 3: शैक्षिक योग्यता के अनुसार वर्गीकरण

N = 500, (सभी विषयों का अध्ययन)

समूह	विशेषता	विनिर्देश	संख्या	%
1	शिक्षित	हाई स्कूल से परे	133	26.6
2	आंशिक रूप से शिक्षित	पढ़े-लिखे नहीं, लेकिन अनपढ़ नहीं	299	59.8
3	निरक्षर	कभी स्कूल नहीं गया	068	13.6

यह पाया गया कि अध्ययन विषयों के बहुमत (59.8 प्रतिशत) आंशिक रूप से शिक्षित थे, 13.6 प्रतिशत

निरक्षर थे और 15.6 प्रतिशत ने हाई स्कूल से परे कुछ शिक्षा प्राप्त की थी। सरकारी नीतियों के अनुसार प्राथमिक शिक्षा में आदिवासी बच्चों के लिए विशेष प्रावधान हैं। उन्हें उच्च शिक्षा के लिए संस्थानों में जाने के लिए प्रेरित करने के लिए विशेष प्रावधान भी हैं। आदिवासियों की शैक्षिक स्थिति में सुधार के सभी प्रयास अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं। वांछित लक्ष्य। आदिवासी स्कूलों में योग्य शिक्षकों की भर्ती और शिक्षा का माध्यम लगातार समस्या है।

निष्कर्ष

आदिवासी समस्याओं को उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार, गरीबी में कमी, उत्पादकता के स्तर को बढ़ाने, निरक्षरता को दूर करने, शोषण को खत्म करने, आदिवासी क्षेत्रों में सहायक बुनियादी ढांचे आदि के लिए विकासोन्मुख दृष्टिकोण से देखने की तत्काल आवश्यकता है। कुछ मूलभूत सेवाएं जैसे पेयजल, स्वास्थ्य, आवास, पोषण, ग्रामीण सड़कें आदि उन्हें प्रदान करने की आवश्यकता है। महिलाओं के आसपास के समाज को उनकी क्षमताओं पर विश्वास दिलाना, साथ ही महिलाओं में अपने बारे में वही विश्वास विकसित करना एक चुनौती है। जनजातीय महिलाओं की समग्र सेवा शिक्षित करना, सूचित करना, मनोरंजन करना और सामान्य जागरूकता और आत्म-निर्भरता की भावना पैदा करना है। यह कार्य वास्तव में कठिन है क्योंकि सदियों पुराने मिथकों और विश्वासों को तोड़ना एक कठिन कार्य है। आदिवासी महिलाओं के शैक्षिक स्तर को बढ़ाना ही एकमात्र कुंजी है। उनमें जागरूकता पैदा करें, और यह लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसे रैलियों, जागरूकता शिविरों, प्रशिक्षणों आदि द्वारा भी पूरा किया जा सकता है और यह सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के सभी विकास कार्यक्रमों का एक नियमित संबद्ध एजेंडा बन जाना चाहिए।

संदर्भ

1. डॉ. रूप कमल कौर (2020) जनजातीय महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका खंड-6 अंक-5 2020 IJARIIE-ISSN(O)-2395-4396

2. मुकेश कुमार(2018) “आदिवासी बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन झारखण्ड : में सन्दर्भ के” संबद्ध शिक्षा में अग्रिम और विद्वानों के शोध के जर्नल में | बहुविषयक शैक्षणिक अनुसंधान

3. मित्रा, अपर्णा की महिलाओं में जातियों अनुसूचित . स्थिति भारत में जनजातियाँ। सामाजिक अर्थशास्त्र-जर्नल। का 2007 को एक्सेस किया गया

4. भसीन वी. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति, स्टड। घर कॉमविज्ञान ., कमला राज-इंटरप्राइजेज 2007;1(1):1-16.

5. सरिता आर्य (2012) “जनजातीय शिक्षा का एक आलोचनात्मक अध्ययन संदर्भ विशेष के महिलाओं : में” प्रशांत विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान में जनजातीय विकास पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी। पर : विश्वविद्यालय प्रशांत, उदयपुर, राजस्थान वॉल्यूम: 1

6. आजाद अहमद अंद्राबी, (2014) "जम्मू और कश्मीर की जनजातीय महिलाओं के शैक्षिक विकास का एक अध्ययनआर्ट्स ऑफ जर्नल ", साइंस एंड कॉमर्स, आईएसएसएन 2231-4172

7. डॉ) नीरजा .पी.2011) 2011 सामाजिक विज्ञान और मानवता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन IPEDR खंड 5 (2011) © (2011) IACSIT प्रेस, सिंगापुर

8. पूनम बिंझा (2020)"झारखंड की आदिवासी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति" एप्ली डी रेस आर्क एच 2020 की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका; 6(11): 32-37 आईएसएसएन प्रिंट: 2394-7500 आईएसएसएन ऑनलाइन: 2394-5869 इम्पैक्ट फैक्टर: 8.4 आईजेएआर 2020; 6(11): 32-37 www.allresearchjournal.com

9. डॉ. देबाहुति पाणिग्रही (2019)" जनजातीय समुदायों में शिक्षा के विकास के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: ओडिशा के मलकानगिरी जिले का एक केस स्टडी" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस इन्वेंशन (IJHSSI) ISSN (ऑनलाइन): 2319 - 7722, ISSN (प्रिंट)): 2319 - 7714 www.ijhssi.org || खंड 8 अंक 09 सेर। मैं || सितंबर 2019 || पीपी 39-48

10. आदिवासी भारत में राधा एस एन साक्षरता भारत में जनजातीय परिवर्तन में एक मूल्यांकन। बुद्धदेव चौधरी द्वारा संपादित। इंटर इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली 1982।

Corresponding Author

Nitesh Kumar Suman*

Research Scholar, Kalinga University